Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)

March 28, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

Class :- B.A., Part – I (H)

Topic :- Four Noble Truths

बौद्ध दर्शन भारतीय दर्शन की अवैदिक परंपरा अथवा श्रमण परंपरा का एक प्रमुख दर्शन है। यह दर्शन अपने विचारों को मूल रूप से चार्वाक और जैन दर्शन से ग्रहण करता है, इस कारण इसके अनेक सिद्धांत चार्वाक और जैनों के अनुरूप मानता है। जैसे कि ईश्वर की सत्ता में अविश्वास, आत्मा के अस्तित्व का खंडन, बंधन एवं मुक्ति के संदर्भ में जो इनके विचार हैं वह सभी कुछ न कुछ रूप में चार्वाक एवं जैनदर्शन से प्रेरित मालूम पड़ते हैं। मुख्य रूप से बुद्ध ने अपने उपदेशों में व्यक्ति को जीवन में दुखों से मुक्ति का रास्ता बताया। बुद्ध अपने राज्य काल में जब वे एक राजकुमार हुआ करते थे तब से उनका जीवन संसार से विरत रहता था। एक बार जब वे भ्रमण कर रहे थे, तब उन्हें चार प्रकार के दृश्य देखने को मिले जिनमें से एक बीमार व्यक्ति, एक वृद्ध व्यक्ति, एक मृत व्यक्ति, और एक सन्यासी का दर्शन हुआ। इन चारों दृश्यों को देखकर उन पर एक अलग प्रभाव पड़ा और उनमें वैराग उत्पन्न हो गया। इसका प्रभाव यह हुआ कि वे गृह त्याग कर सन्यासी हुए जो बौद्ध ग्रंथों में महाभिनिष्क्रमण कहलाता है।

बुद्ध ने अपने संपूर्ण दार्शनिक विचारों को मुख्य रूप से चार भागों में बांटा या यूं कहा जाए कि संसार के समस्त दुखों को देखते हुए देखकर उन्होंने अपने विचारों को चारों रूप में रखा है। यह चारों इस प्रकार हैं

1. पहला दुख है जिसे उन्होंने दुख समुदाय
2. दूसरा दुख का कारण है। इन कारणों का के एक क्रम के रूप में 12 कड़ियां बताई जाती है। बौद्ध दर्शन में इसे प्रतीत्यसमुत्पाद वाद कहा जाता है। चूंकि इसमें 12 कड़ियां हैं इसलिए इसे द्वादस निदान चक्र कहा जाता है।
3. तीसरा इनके दर्शन का जो महत्वपूर्ण बिंदु था वह था दुख निरोध जो निर्वाण कहलाता है और
4. चौथा जो निर्वाण प्राप्ति के मार्ग, जिसे अष्टांग मार्ग कहा जाता है।

बुद्ध की शिक्षाओं बुद्ध की शिक्षाओं का ज्ञान हमें पालि त्रिपिटक से ही प्राप्त होता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
March 28, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

प्रथम आर्य सत्य, दुःख समुदाय :– बुद्ध ने अपने प्रथम आर्य सत्य में कहा है कि संसार दुखमय है। सब कुछ दुखमय हैरू सर्वम दुखं दुःखम। बुद्ध का यह निष्कर्ष जीवन की विभिन्न अनुभूतियों से गुजरने के बाद स्थापित हुआ। जीवन में नानाविध दुख है। रोग, वृद्धावस्था, मृत्यु, असंतोष, निराशा, शोक इत्यादि सांसारिक दुखों को अभिव्यक्त करते हैं। बुद्ध ने कहा है की जन्म में दुख है मृत्यु में दुख है, नाश में दुख है, रोग दुख में है, मृत्यु दुखमय है, प्रिय से वियोग दुख में है, अप्रिय से संयोग दुख में है। रोग से उत्पन्न पंच स्कंध दुख में है। बौद्ध दर्शन में शरीर, अनुभूति, प्रत्यक्ष, इच्छा एवं विचार को पंचस्कन्ध कहा गया है।

बुद्ध के अनुसार क्षणिक विषयों के लिए आसक्ति ही पुनर्जन्म और बंधन का कारण है। चार्वाक ने बुद्ध के इस कथन को अस्वीकार किया कि सांसारिक जीवन सर्वथा दुःखमय है। उनके मतों में दुखों के साथ–साथ जीवन में सुख प्राप्त करने के भी अनेक साधन उपलब्ध हैं, परंतु बुद्ध तथा अन्य भारतीय दार्शनिकों के अनुसार सांसारिक सुखों को वास्तविक एवं यथार्थ समझना समझना मूर्खता है, क्योंकि ऐसा सुख वास्तविक नहीं होता। वास्तव में सांसारिक सुख क्षणिक होते हैं उनके नष्ट होने पर भी दुख होता है। तब बुद्ध ने कहा इन सुखों के साथ हमेशा यह भय बना रहता है कि कहीं वे नष्ट न हो जाए। इस आधार पर स्पष्ट कहा जा सकता है कि सांसारिक सुख यथार्थ सुख नहीं है।

द्वितीय आर्य सत्य, प्रतीत्यसमुत्पादवादः– बुद्ध के अनुसार विश्व प्रतीत्यसमुत्पाद के नियमों से संचालित होता है और इसके संचालन के लिए ईश्वर नामक किसी सत्ता की आवश्यकता नहीं है। जगत् उत्पत्ति तथा विनाश के नियमों में आबद्ध है, इसलिए उन्होंने भिक्षुओं को 'अप्पदीपो भव' (अपना प्रकाश स्वयं बनो) का उपदेश देकर स्वयं प्रकाश खोजने का उपदेश दिया।

प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है– किसी वस्तु की प्राप्ति होने पर अन्य वस्तु की उत्पत्ति होती है, अर्थात् यह सापेक्ष कारणवाद का सिद्धांत है। प्रतीत्यसमुत्पाद में कारण की सत्ता और कार्य की सत्ता में सापेक्षता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद इस नियम का निरूपण करता है कि 'इसके होने पर यह होता है, इसके उत्पाद से यह उत्पन्न होता है, इसके न होने पर यह नहीं होता, इसके विरोध से यह निरुद्ध है।' प्रतीत्यसमुत्पाद का एक पारमार्थिक पक्ष है जो परमार्थ को सत् और असत् से परे बताता है और एक व्यावहारिक पक्ष है जो संसार में कार्य–कारण–नियम का विशिष्ट प्रतिपादन करता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
March 28, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

सापेक्षवादी दृष्टि से विचार करने पर प्रतीत्यसमुत्पाद संसार (दुःख) है तथा वास्तविकता की दृष्टि से यही निर्वाण (दुःख–निरोध) है। संसार की प्रत्येक वस्तु सापेक्ष्य होने के कारण न तो पूर्ण सत्य है और न ही पूर्ण असत्य है।

संसार की प्रत्येक वस्तु पूर्ण सत्य इसलिए नहीं है कि यह जरा–मरण के अधीन है और पूर्ण असत्य इसलिए नहीं है कि इसका अस्तित्व दिखाई देता है।

बुद्ध का 'मध्यम मार्ग दोनों अतिवादी विचारधाराओं– शाश्वतवाद और उच्छेदवाद दोनों का निषेध करता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार जैसे दुःख (जरा–मरण) का कारण जन्म है, उसी प्रकार जन्म का कारण भी कर्मफल को उत्पन्न करनेवाला अज्ञान रूपी चक्र है।

कार्य–कारण श्रृंखला में बारह प्रधान कड़ियाँ हैं जो एक–दूसरे को उत्पन्न करने के कारण हैं। इसे कार्य–कारण श्रृंखला, द्वादश निदान, भवचक्र, जीवन चक्र आदि कहा गया है।

जीवन–चक्र के बारह क्रम हैं– अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति और जरा–मरण।

जीवन–चक्र के प्रथम दो कारण पूर्व जन्म से संबंधित हैं तथा अंतिम दो भावी जीवन से और शेष वर्तमान जीवन से संबंध रखते हैं।

तृतीय आर्य सत्य, निर्वाणः– दुःखों का मूल कारण अविद्या है, इसलिए विद्या द्वारा अविद्या का निरोध कर देने पर दुःख–निरोध हो जाता है। साधारणतः इसे ही 'निर्वाण' कहा गया है। निर्वाण का अर्थ जीवन का विनाश न होकर दुःखों का विनाश है और इसकी प्राप्ति जीवनकाल में भी संभव है। बुद्ध के अनुसार यह वर्णनातीत अवस्था है। निर्वाण मानव के जीवन का चरम लक्ष्य है– जरा–मरण (दुःख) के बंधन से मुक्ति अर्थात् निर्वाण।

सामान्यतः जन्म–मरण की परंपरा अविद्या, क्लेश और कर्म पर आश्रित है। विद्या से क्लेश क्षीण हो जाता है और संसार–चक्र का निरोध हो जाता है। साधारणतः इसे ही निर्वाण कहा गया है। निर्वाण का शाब्दिक अर्थ है 'बुझ जाना' अर्थात् जीवन–मरण के चक्र से छुटकारा। वैदिक धर्म के अनुसार सत्कर्मों से व्यक्ति में निहित आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है और व्यक्ति पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो जाता है।

Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
March 28, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

बौद्ध धर्म में निरोध अथवा निर्वाण विनाश का सूचक नहीं है। आग का बुझना आग का नाश नहीं, किंतु उसका अपने मूल–प्रभाव में फिर से लय हो जाना है। बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण इसी जन्म में प्राप्त हो सकता है, किंतु महापरिनिर्वाण मृत्यु के बाद ही संभव है। बुद्ध का कहना था कि जन्म से कोई ब्राह्मण या अब्राह्मण नहीं होता, वरन् कर्म से ही जाति का निर्धारण होता है। बुद्ध ने सभी जाति और वर्ण के लोगों को अपने धर्म और संघ का द्वार खोल दिया।

चतुर्थ आर्य सत्य, निरोधगामिनी प्रतिपद्:– दु:ख–निरोधगामिनी प्रतिपद् अर्थात् जिन कारणों से दु:ख की उत्पत्ति होती है, उनके नष्ट करने का उपाय ही निर्वाण का मार्ग है। दु:ख–निरोध के आठ साधन बताये गये हैं जिन्हें 'अष्टांगिक मार्ग' कहा गया है।

1. सम्यक् दृष्टि– वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को जानना ही सम्यक् दृष्टि है।
2. सम्यक् संकल्प– आसक्ति, द्वेष तथा हिंसा से मुक्त विचार रखना ही सम्यक् संकल्प है।
3. सम्यक् वाक– सदा सत्य तथा मृदु वाणी का प्रयोग करना ही सम्यक् वाक् है।
4. सम्यक् कर्मांत– इसका आशय अच्छे कर्मों में संलग्न होने तथा बुरे कर्मों के परित्याग से है।
5. सम्यक् आजीव– विशुद्ध रूप से सदाचरण से जीवन–यापन करना ही सम्यक् आजीव है।
6. सम्यक् व्यायाम– अकुशल धर्मों का त्याग तथा कुशल धर्मों का अनुसरण ही सम्यक् व्यायाम है।
7. सम्यक् स्मृति– इसका आशय वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के संबंध में सदैव जागरूक रहना है।
8. सम्यक् समाधि– चित्त की समुचित एकाग्रता ही सम्यक् समाधि है।

प्राचीन बौद्ध साहित्य में शील, समाधि और प्रज्ञा को दु:ख–निरोध का साधन बताया गया है। शील का अर्थ है सम्यक् आचरण, समाधि का अर्थ है सम्यक् ध्यान तथा प्रज्ञा का अर्थ सम्यक् ज्ञान से है।

आर्य सत्यों के ज्ञान तथा अनुशीलन से निर्वाण की प्राप्ति मानव को जरा–मरण के चक्र से छुटकारा दे सकती है।

बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग के अंतर्गत अधिक सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करना या अधिक काया—क्लेश में संलग्न होना— दोनों को वर्जित किया है। इस संबंध में उन्होंने 'मध्यम मार्ग का उपदेश दिया है।

Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy
Mobile 8210837290
Whatsapp 8271817619
E-mail Id – kumar999sonu@gmail.com